त्रैमासिक
वर्ष १ : अंक २
जून, १९७०
मूल्य : तीन रुपये
सम्पादक : मार्कण्डेय
२-डी, मिन्टोरोड, इलाहाबाद

नानावक्तृकपूर्वपक्षसिद्धान्तवान् वाक्यसन्दर्भः
शब्दकल्पद्रुम, भाग २, पृ० १७

कथा वह वाक्यसन्दर्भ है, जिसमें नाना वक्ता हों, पूर्वपक्ष का उपस्थापन हो और सिद्धान्तपक्ष की प्रतिष्ठा हो।

इस अंक में

पत्र और पत्रांश : ४।

नव लेखन पर धारावाहिक बहस

विजय मोहन सिंह : एक ऐतिहासिक बिन्दु पर मुनासिब कार्यवाई : ९। रमेश कुंतल मेघ : नव-युवा-चिन्तन तथा लेखन का नवारंभ : १२। चन्द्रभूषण तिवारी : व्यवस्था विरोधी यथार्थ और सृजन के नये सन्दर्भ : १६।

प्रवेश : २३

एक राजनीतिक संवाद

सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी, मधु लिमये, त्रिदिवकुमार चौधरी, सी० राजेश्वर राव तथा बी० टी० रणदिवे : भारत में समाजवाद : दिशा और दृष्टि : २५।

एक कहानी

भीष्म साहनी : रास्ता : ३८

व्यक्ति और विचार

सुरेन्द्र चौधरी : यशपाल : ४८।

दृष्टिगत

भैरव प्रसाद गुप्त : जी हां, अंधेरे के खिलाफ : ५५ ।

दो कहानियां

अमरकांत : बस्ती : ६० । शेखर जोशी : मेन्टल : ६६ ।

पुस्तकें और लेखक

राजीव सक्सेना : क्यों फंसे: ७० । कुमार विमल : कटती प्रतिमाओं की आवाज : ७३। प्रकाश चन्द्र गुप्त : पतझर : ७७। परमानन्द श्रीवास्तव : रिश्ता और अन्य कहानियां : ७९ डा० बेचन : माटी की महक : ८२ । प्रतिभा अग्रवाल : पहला राजा : ८४ ।

रंगमंच

निरंजन पाठक : दैनिक जनतन्त्र : ८७ । भैरवप्रसाद गुप्त: अजेय वियतनाम : ८९ ललितमोहन अवस्थी : बापू की हत्या हजारवीं बार : ९१ ।

मूल्यांकन

भगवत शरण उपाध्याय : प्राचीन भारत की संस्कृति और शभ्यता : ९३ । दामोदर धर्मानन्द कोसाम्बी : भारत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : ९६ । वी० वी० गोखले : दामोदर धर्मानन्द कोसाम्बी : १०५ ।

निवेदन : 'कथा' के प्रकाशक कठिन आर्थिक स्थिति में कथा-प्रकाशन कर रहे हैं। उन्हें सहयोगियों, मित्रों तथा मुख्य रूप से पाठकों के व्यापक सहयोग की आशा है। सारे देश में नियमित पाठकों के एक ऐसे परिवार की बड़ी आवश्यकता है जिनसे देश की समस्याओं के साथ साहित्य और सास्कृति के सम्बन्ध में बातचीत की जाए। हमारी ओर से कथा का हर पाठक उसका प्रिय सलाहकार भी होगा, जिनके साथ विचार–विमर्श कथा का पहला कर्तव्य होगा। इसलिए कथा के ग्राहक बनकर कथा के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें ।

चन्दा : कथा के वर्ष में चार अंक प्रकाशित होंगे जिनमें तीन सामान्य अंक तथा एक विशेषांक होगा। सामान्य अंकों का मूल्य तीन रुपये प्रति अंक तथा विशेषांक का पांच रुपये होगा । चन्दे की दरें इस प्रकार होंगी :

एक वर्ष	:	१२·००
दो वर्ष	:	२२·००
पांच वर्ष	:	५०·००
आजीवन	:	१०१·००
अभिभावक	:	५०१·००

एजेन्सी तथा विज्ञापन के लिए अलग से पत्र-व्यवहार करें ।

प्रवेश

अनेक विवशताओं के कारण कथा का यह अंक देर से और अनेक उच्चकोटि की रचनाओं और नये स्तम्भों को छोड़कर प्रकाशित हो रहा है। अगला अंक शीघ्र प्रकाशित होगा जिसमें आपको नये संचयन के साथ वह सब भी पढ़ने को मिलेगा।

प्रस्तुत अंक में चिन्तन का एक लम्बा विस्तार विद्यमान है। प्रबुद्धजन आज के जटिल जीवन संदर्भों से लेकर प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सही मूल्यांकन के प्रयत्न का एक अलग और वास्तविक मार्ग कथा में स्पष्ट देख सकेंगे, जिसे निहित स्वार्थ के बुद्धिजीवियों ने धुंधला कर रखा है और आज भी वह प्रक्रिया जारी है और उस हद से गुजर रही है जहां कला और साहित्य देश की व्यापक जनता के जीवन से पूर्णतः विच्छिन्न हो चले हैं। शायद ही भारतीय इतिहास में कोई दूसरा ऐसा काल-खंड खोजा जा सके जब सड़ी-गली, बदबू भरी व्यवस्था की सेवा में अनेक वैज्ञानिक उपकरणों से सज्जित बुद्धिजीवियों की इतनी बड़ी संख्या पूरी शक्ति से लगी रही हो। आश्चर्य तो इस बात से होता है कि लोक-द्रोही बुद्धिजीवियों की यह सेना वही सब करती हुई दिखाई पड़ती है जो जनता के जीवन में व्याप्त है। मसलन यदि नशीली वस्तुओं का प्रचलन लोगों में बढ़ रहा है तो इसे व्यापक प्रचार देने में यह उन वस्तुओं के निर्माताओं से भी आगे बढ़ जाते हैं। सीमा पर पहुँची हुई यह क्रूर असम्पृक्तता हमारे नये सामाजिक विकास की एक अनोखी उपलब्धि है जो आज के यथास्थितिवादियों और परिवर्तनकारियों के बीच एक मजबूत सुरक्षा-दीवार का काम कर रही है। अब यह पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है कि इस दीवार के उपकरण क्या-क्या हैं? सुरक्षाकामी बुद्धिजीवियों की यह लम्बी कतार व्यवस्था से अनेक प्रकार के आर्थिक अवदानों से बंधी हुई है। निःसंदेह उसमें धनिकों की मोटी नौकरियां, पाठ्य-पुस्तकें, पुरस्कार और पदवियां महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं और उसी अनुपात में कलाकारों का महत्व समाज में घट चला है। अब तो अनुभव के

आधार पर भी यह स्पष्ट हो चला है कि कलाकारों का दर्जा आगामी जनसंघर्षों में शायद अत्यन्त साधारण होगा और जो कलाकार उत्पीड़ितों के साथ होंगे, वे भी इस कारण महत्वपूर्ण होंगे कि वे परिवर्तनकारियों के पीछे दृढ़ता पूर्वक चलते होंगे और तब तक यह अस्वाभाविक भी नहीं लगेगा क्योंकि इस बीच अधिकांश कलाकार और लेखक अर्थवाद के चंगुल में फंसकर अपने ही कृत्यों से दम तोड़ चुके होंगे और उनकी कोई सामाजिक प्रतिष्ठा शेष नहीं बची होगी, जिसकी शुरुआत वर्तमान सामाजिक सन्दर्भों में पूरी तरह हो चुकी है। हम स्पष्ट देख रहे हैं कि बड़ा से बड़ा पुरस्कार देकर भी व्यवस्था अपने समर्थक लेखकों या कलाकारों को सामाजिक सम्मान दिला पाने में असमर्थ हो चली है, बल्कि इक्का-दुक्का वे लोग अधिक सम्मान के योग्य माने जाने लगे हैं जो पुरस्कार और पदवियों को अस्वीकार कर रहे हैं।

इसी कारण 'कथा' वर्तमान सामाजिक सन्दर्भों में बुद्धिजीवियों की वास्तविकतावादी भूमिका और व्यापक जनहित के कठिन मार्ग के लिए प्रतिश्रुत है जैसा कि इसके हर पृष्ठ से किसी पाठक को ज्ञात हो सकेगा।

अपनी इसी प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए इस अंक में 'भारत में समाजवादः दिशा और दृष्टि' शीर्षक एक राजनीतिक सम्वाद दिया जा रहा है। अधिक व्यवस्थित और संगत विचार के लिए पूरी चर्चा को प्रश्नावली में बांधा गया है जिससे हमारी आज की परिस्थितियों के माध्यम से समाजवाद सम्बन्धी मुख्य प्रश्नों का उत्तर अधिकारी विचारकों द्वारा, प्रस्तुत किया जा सके—जिसे जानने-समझने की उत्सुकता आज की मानसिकता का मुख्य प्रसंग है। ऐसा ही एक प्रयत्न 'नवलेखन पर धारावाहिक बहस' में भी किया गया है। ऊल-जलूल मिथ्या बहस के बीच से नव लेखन की मुख्य प्रवृत्तियों को विश्लेषित करने की यह प्रक्रिया कथा के आगामी अंकों में भी जारी रहेगी और प्रासंगिक विश्लेषणों का स्वागत होगा।

'मूल्यांकन' में इस बार विशिष्ट सामग्री दी गई है। लीक से हटकर वास्तविकताओं के विवेचन का मार्ग कितना कठिन है इसका अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि डी० डी० कोसाम्बी जैसी महान प्रतिभा को महाजनी समाज-व्यवस्था ने कितनी कुशलता से भारतीय जनता के पास पहुँचने से रोक रखा है। हिन्दी में अनूदित उनकी पहली पुस्तक पर परिचर्चा देने का कथा का अभिप्राय यह भी है कि भारत के इस महान पुत्र के अध्ययन का समय सामने है।

कथा के इस अंक में अनेक त्रुटियां मिल सकती हैं—जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक

भूल सुधार

'भारत में समाजवाद : दिशा और दृष्टि' शीर्षक सम्वाद में मधु लिमये, एम० पी० तथा त्रिदिव कुमार चौधरी एम० पी० को क्रमशः सं० गो० पा० तथा क्रांतिकारी समाजवादी दल के लोकसभा में नेता होने का गलत परिचय इन नेताओं की अत्यधिक लोकप्रियता के कारण छप गया है, पाठक इसे सुधार लेने की कृपा करें।